

2015/00008

तारीख दुपल

हुजूम वा कारवाही मय इतिविधरत जय

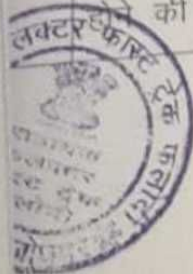
नम्बर व तारीख
अदकाम जो इस
हुजूम की तारीख
में जारी हुए

18/08/20

न्यायालय हाजा में विचाराधीन प्रकरण संख्या 307/18 अनवान सुभानखा बनाम जहुरदीन वगैरा अन्तर्गत धारा 88,188,92ए राजस्थान टिनेन्सी एक्ट में प्रतिवादीनी सं. 3, 4 के अधिवक्ता सलीम खान मेहर ने एक प्रार्थना पत्र अन्तर्गत आदेश 7 नियम 11 व सपठित धारा 151 सी.पी.सी. के तहत पेश कर निवेदन किया कि वादी ने प्रतिवादीगण के विरुद्ध ग्राम भीयासर पटवार क्षेत्र भीयासर के खसरा नम्बर 1368 रकबा 11 बीघा 13 बीस्वा व खसरा नम्बर 1368/1 रकबा 11 बीघा 13 बीस्वा कुल रकबा 23 बीघा 06 बीस्वा बाबत खातेदारी अधिकारों की घोषणा का दावा पेश किया कि उक्त वादग्रस्त सम्पूर्ण भूमि अपने पिता के खातेदारी की होना बताया तथा उनके फौत होने पर वादी एवं प्रतिवादी संख्या 1 व 2 के नाम से नामांतरकरण नहीं भरना होना बताते हुवे उक्त दावा पेश किया है तथा दावा में वादी ने यह स्वीकार किया है कि हमारे पिताजी फौत हुवे तब मेरा व प्रतिवादी संख्या 1 व 2 का नाम दर्ज नहीं किया गया था एवं इनके भाई अनुखां, करीमखां फतेखां के नाम दर्ज कि गई।

वकील प्रतिवादी संख्या 3 व 4 की ओर से प्रस्तुत पार्थना पत्र में बताया की दिनांक 24 मार्च सन् 1981 को खेत खसरा नम्बर रकबा 23.06 बीघा भूमि अनु उर्फ अनवर, करीमा व फतीमा उर्फ फते खां पिसरान बद्दीखां से नेकु खां पुत्र जानू खां ने जरीये विक्रय विलेख के खरीद की थी। व नेकु खां से प्रतिवादी संख्या 3 व 4 ने उक्त भूमि जरिये रजिस्टर्ड विक्रय विलेख के खरीद कि थी उक्त रजिस्टर्ड विक्रय विलेख को सिविल न्यायालय द्वारा ही निरस्त करवाया जा सकता है। उक्त वाद को सुनने का क्षेत्राधिकार राजस्व न्यायालय को नहीं है

वकील वादी ने प्रार्थना पत्र अन्तर्गत आदेश 7 नियम 11 सी.पी.सी. का जवाब पेश कर बताया की कथित विक्रय विलेख को निरस्त करने की वादी ने अपने वाद पत्र में कोई इस्तदुआ नहीं की है और न ही विक्रय पत्र निरस्त करने के अभाव ही वादी ने किये है वादी ने अपने खातेदारी अधिकारों की घोषणा व स्थाई निषेधाज्ञा का खातेदारी अधिकारों की काश्त भूमि के समन्ध में न्यायालय हाजा के क्षेत्राधिकार का ही है प्रतिवादीगण ने अपनी साक्ष्य बन्द होने की स्टेज पर वाद को लम्बा करने की नियत से यह प्रार्थन पत्र पेश



[Signature]
वकील कलक्टर एवं कायपालक उम्दनायक
(फास्ट ट्रैक) फलादी



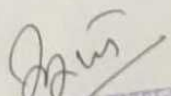
किया जो खारिज योग्य है। अतः जवाब पेश कर निवेदन है कि प्रतिवादी संख्या 03 व 04 द्वारा पेश प्रार्थना पत्र खारिज किया जावे।

दौराने बहस वकील प्रतिवादी संख्या 3 व 4 के अधिवक्ता ने बताया की वादी ने अपने पिता बंदी खां के सभी वारीसान को पक्षाकारान भी नहीं बनाया है। तथा सभी पक्षकारों के आगे से आगे किस प्रकार खातेदारी अधिकार हस्तान्तरण हुए हैं यह भी दावों में उलेख नहीं किया है वादी ने अपना वाद आधा अधुरा पेश किया है। तथा न्यायालय के समक्ष सभी तथ्यों को पेश नहीं किया है तथा नहीं वादी ने अपना वाद स्वच्छ हाथों से पेश किया है इस लिये वादी का वाद विधि विरुद्ध होने से मर्जे खर्चा खारिज किया जावे।

अधिवक्ता वादी ने अपनी बहस में बताया की वादग्रस्त भूमि वादी के एवं प्रतिवादी संख्या 1 व 2 के पिता बंदी खां के खातेदारी में थी बंदीखां के फौत होने पर सभी वारीसान के नाम से बराबर दर्ज हो जानी थी लेकिन वादी व प्रतिवादी संख्या 1 व 2 के नहीं हुई एवं उनके भाईयों के नाम दर्ज हो गई। इसलिये वादी एवं प्रतिवादी संख्या 1 व 2 के भाईयों ने अपने हिस्से से ज्यादा हमारे हिस्से कि भूमि का बेचान कर दिया है इसलिये प्रतिवादी संख्या 03 व 04 द्वारा पेश प्रार्थना पत्र खारिज किया जावे।

वादी एवं प्रतिवादीगण के अधिवक्ता के प्रार्थना पत्र पर बहस सुनी गई एवं प्रार्थना पत्र एवं पत्रावली का अवलोकन किया गया बाद अवलोकन एवं बहस पर मनन से यह पाया गया कि वादी एवं प्रतिवादी संख्या 1, 2 व इनके भाई अनुखां, करीमखां फतेखां जो उक्त वाद में पक्षकार नहीं बनाये गये है ये सभी बंदी खां के वारिसान है जिसमें से अनुखां, करीमखां फतेखां ने बंदीखां के फौतेदगी के बाद सम्पूर्ण भूमि अपने नाम से फौतेदगी नामानतकरण दर्ज करवा ली। एवं अनुखां, करीमखां फतेखां सम्पूर्ण भूमि नेकुखां पुत्र जानुखां को बेचान कर दी। एवं नेकुखां ने प्रतिवादी संख्या 3 व 4 को बेचान के जरिये सदभावी क्रेता को बेचान कर दी एवं उससे प्रतिफल की राशि भी प्राप्त कर मौके पर कब्जा काश्त खरीदार प्रतिवादी संख्या 03 व 04 को सुपुर्द कर दिया है उक्त वादग्रस्त भूमि को अनुखां, करीमखां फतेखां द्वारा बेचान नेकुखां पुत्र जानुखां को कर दी। एवं नेकुखां ने प्रतिवादी संख्या 3 व 4 को बेचान की इसकी जानकारी वादी एवं प्रतिवादी संख्या 1 व 2 को भली भांति थी। जिससे यह साबित हो रहा है कि भाईयों ने आपस में दुर्भीसन्धि कर जमीन को वापिस हड़पने के लिये यह दावा पेश किया है वादी एवं प्रतिवादी संख्या 1 व 2 चाहते तो अपने भाईयों के विरुद्ध बेचान की गई भूमि की प्रतिफल की राशि




वकील कलवा एवं कायपालक इन्वॉल्व
(फास्ट ट्रक) फलादी

बाबत सिविल न्यायालय में चाराजोई कर सकते थे लेकिन अपने भाईयो से मिलावट कर खरीदारो के विरुद्ध यह गलत दावा पेश करना साबित हो रहा है एवं वादी ने अपने पिता बट्टी खां के सभी वारीसान को पक्षाकारान भी नहीं बनाया है। तथा सभी पक्षकारों के आगे से आगे किस प्रकार खातेदारी अधिकार हस्तान्तरण हुए हैं यह भी दावों में उल्लेख नहीं किया है वादी ने अपना वाद आधा अधुरा पेश किया है। जिस कारण वादी को कोई वादकारण पैदा नहीं होने से एवं दावा दुर्मीसन्धि का होने से वाद विधिद्वारा वर्जित है जो दावा चलने लायक नहीं है।

अतः प्रतिवादी संख्या 03 व 04 द्वारा प्रस्तुत प्रर्थना पत्र अन्तर्गत आदेश 7 नियम 11 सी.पी.सी. व सपटित धारा 151 सी.पी.सी.को स्वीकार कर वादी द्वारा पेश वाद खारीज किया जाता है पत्रावली फ़ैसल शुमार होकर नम्बर से कम होकर दाखिल दफतर हो।

आदेश आज दिनांक 18.08.2022 को सरे इजलास में सुनाया गया।



यशपाल अहूजा (आर.प्र.एस.)
सहायक कलक्टर एवं कार्यपालक
पञ्जाब कानून एवं न्याय पाठशाला, जहानाबाद
(फ़ाउण्डिंग) फ़लादी